We Live Togather

हम साथ–साथ जियेंगे

घर कितना प्यारा होता है। घर वह जहाँ हम मिलजुल कर प्यार से रहते है। घर वह जहाँ हम सम्बन्धों में अपने उत्तर दायित्व को समझ उनका निर्वाह करते है। घर में शान्ति का बसेरा रहता है। घर सुख का अहसास कराता है। घर में अपनत्व महसूस होता है। घर हमें आपस में बांधता है इसीलिए घर मे हम साथ -साथ रहते है।

पृथ्वी ग्रह ब्रह्माण्ड में हम मनुष्य आत्माओ का घर यहाँ हम जीव आत्मा के रूप मे रहते है। इस पृथ्वी ग्रह पर घर बनाकर रहना यह एक सामाजिक व्यवस्था है। लेकिन जब मनुष्य की मनोस्थिति मात्र चार दिवारी के छोटे से घर में सिमित हो जाती है तो मनोविकृतीयां पैदा होती है। ये मनोविकृतियां पृथ्वी ग्रह को प्रदुषित करती है। यही प्रदुषण पृथ्वी ग्रह की स्थितियों में परिवर्तन कर उसे ऐसा रूप दे देता है कि धरती मां को विवष हो पुकार करनी पड़ती है ''मेक मी हेविन'' । ये पुकार जो धरती मां की है इसे अनदेखा नही किया जा सकता। ये प्यारा पृथ्वी ग्रह हम सबके लिए है। मात्र चार दिवारी वाला घर ही हमारा घर नहीं है। ये पृथ्वी ग्रह हम सबका बेहद का घर है। इस बेहद घर मे रहने वाले हम सब जीव आत्माये है। यदि हम भिन्नताओ को लेकर बिखरते हैं तो घर टूटता है। घर का टूटना अर्थात सुख-शान्ति प्यार का समाप्त होना। सुख-शान्ति के बिना हेविन कहां। अतः पृथ्वी पर रहने वाले हर जीव को अपने आपको यह संकल्प देना चाहिये कि पृथ्वी ग्रह की सुरक्षा के लिए ''हम साथ-साथ जियेंगे'' ।

जीवन का ये सामान्य सा सिद्धांत ''हम साथ-साथ जियेंगे'' पृथ्वी वासियों को एक दो के साथ जोड़ता है, एक दो मे समझ पैदा करता है। परस्पर प्यार बढ़ाता है। स्वयं के सम्मान को जगाता है तथा सम्मुख वाले के प्रति सम्मान की दृष्टि पैदा करता है। ''हम साथ-साथ जियेंगे'' का सिद्धांत व्यक्ति में अमरत्व की भावना विकसित करता है। संसार में परस्पर प्यार के लिए मर मिटने वाले लोग जन्म-जन्म साथ रहने के सपने संजोते है। वे एक शरीर के बाद दूसरे शरीर द्वारा भी परस्पर मिलन की आश रखते है। अपने इस प्यार के द्वारा सुखद जीवन के लिए जहाँ वे एक ओर इस सिद्धांत ''हम साथ-साथ जियेंगे'' की पुष्टि करते है साथ ही हमें अमरत्व के प्रति अपनी आस्था दर्शा कर हमारे आत्मा होने का संदेश देते है।

आत्मा की दृष्टि से जब हम इस सिद्धांत पर दृष्टि डालते है तो पाते है कुछ विशेष। आत्माओ का मूल घर परमधाम है। सूर्य, चांद, सितारों के भी ऊपर परमधाम एक ऐसा लोक है जहाँ सूक्ष्म सुनहरा लाल रंग का द्विय प्रकाश है। यह प्रकाश ब्रह्म महतत्व का है। ब्रह्ममह तत्व प्रकृति के तत्वो से भिन्न हैं। ब्रह्ममह तत्व में आत्माए परमात्मा पिता के साथ निवास करती है। परमधाम आत्माओ का अनादि घर है। संसार में

भिन्न नाम, रूप, रंग, धर्म, देश भाषा के आधार पर पार्ट बजाने वाली सभी आत्माये मूलतः अपने इसी लोक परमघाम(परलोक) की रहवासी है। संसार में तरह-तरह की भिन्नता के आधार पर पार्ट बजाने वाली सभी आत्माये अपने अनादि घर परमधाम मे सदा शांत स्वरूप स्थिति में निवास करती है। इस आध्यात्मिक दृष्टि से भी सभी आत्माये साथ-साथ जीती है अथवा अपने आस्तित्व में रहती है। आत्माओ का परमधाम में शांत स्थिति मे रहना जीवन के इस सामान्य सिद्धांत की पुष्टि करता है। ''हम साथ-साथ जियेंगे'' इस सिद्धांत की पालना करते जीवन में शान्ति कायम रह सकती है, प्यार बढ़ सकता है। अपनत्व पैदा हो सकता है। एक दूसरे के लिए स्नेह व सम्मान विकसित हो सकता है। आज के युग में जब पृथ्वी पुकार रही है ''मेक मी हेवीन'' ऐसे में यह सिद्धांत अधिक प्रांसागिक हो जाता है।

''हम साथ-साथ जियेंगे'' ऐसी महान संकल्पना रखने वालो के सामने अनेक चुनौतियां है। पर यदि वे इस सिद्धांत की पालना के लिए कमिटिड है तो निश्चित ही वे धरती मां की पुकार को पूरा करेगें। इस सिद्धांत की पालना मे आडे आने वाली खाईयों को भी वे पाटेगें। ये खाई अमीर और गरीब की है। ये खाई छोटे- बड़े की है। ये खाई ऊँच-नीच की है। ये खाई जो बहुत खतरनाक है अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने की है- चाहे वह धर्म की दृष्टि से हो व्यवसाय की दृष्टि से हो, राष्ट्र की दृष्टि से हो, कार्य क्षेत्र की दृष्टि से हो अथवा विशेषताओ की दृष्टि से हो। संसार में अन्तर होना स्वाभाविक है। अन्तर का समाप्त होना जरूरी नही है। परन्तु अन्तर के कारण मनोस्थिति में प्रदुषण होना खतरनाक है। प्रदुषण का असर जहाँ वह है जिसमें वह है और जिसके भी इर्द गिर्द है सभी को प्रभावित करता है। इसलिए इस खाई की महसूसता के घातक परिणामों से बचने के लिए मनो स्थिति को ऊँचा उठाना जरूरी है। यह खाई जो दिखाई देती है यदि इसे व्यापक दृष्टि से देखा जाये तो यह मात्र देखने भर की होती है। दो पर्वत चोटियों के बीच प्रतीत होती खाई के धरातल को जब हम देखते है तो पाते है दोनों पर्वत चोटियों की जड़े इस खाई से जुड़ी होती है। अर्थात वह पर्वत चोटी जो ऊँची है उसकी जड़े व खाई का धरातल एक ही स्तर पर है अतः व्यक्ति को चाहिये समाज में भिन्न स्तरो के अन्तरो को देखते हुए वह मन स्थिति मे अन्तर न उत्तपन्न करे। समाज में हर स्थिति, हर स्तर महत्वपूर्ण है। हमारा यह मनोस्थिति का स्तर हमें जीवन के इस समान्य सिद्धांत की पालना के लिए बल देता है।

''हम साथ-साथ जियेंगे'' इस सिद्धांत की पालना करने वाले लोग हर किसी को महत्वपूर्ण समझ उसे धरती मां के रूप को संवारने में सहयोगी बनायेंगे। इस सिद्धांत की पालना करने वाले समाज मे समरसता का माहौल पैदा करेगे। ऐसे लोग ही सच्चे अर्थो मे ईश्वर पुत्र होने का गौरव प्राप्त करेगें।

सम्मान पूर्ण जीवन

जब कई लोग समूह में रह रहे हो ऐसे में कोई किसी को हेय दृष्टि से देखे, कोई किसी को ठेस पहुँचाये, कोई किसी का अहित करे, इन सब हालातो के बीच साथ-साथ रहना मुश्किल होगा। ऐसे में इस सिद्धांत की पालना कैसे होगी कि हम साथ-साथ जियेंगे। पारलौकिक जगत मे कोई अकेला नहीं रहता। अतः नियति को समझ विषम हालातो में भी साथ-साथ जीने की कला मानव की सीखनी होगी।

संसार मे विच्छेद का मूल कारण अभिमान है। जब मैं अभिमान के साथ पोषित होता है तभी यह मैं विकृत होता है। इस मैं मे आई विकृति मनुष्य के व्यवहार को विकृति के रूप में संचालित करती है। सबसे बड़ी विकृति इस मैं की है जीवों की बीच स्व की उपस्थिति को सर्वोच्चता से लेना। जो जीव अन्य जीवो के

बीच विचरण करते हुए स्वयं को सर्वोच्च स्थिति में जीने का अनुभव करता है अथवा अन्य जीवो को ऐसा अहसास देता है। वह जीव अन्य जीवों के साथ अपने सम्बन्धों व समीपता को नकारात्मक दिशा में प्रभावित करता है। मैं के इस विकृत रूप के साथ जीने की दृष्टि जीवन से द्वियता को नष्ट करती है। ये समस्यायें धरती के वायुमण्डल को प्रभावित करती है। ऐसी ही समस्याओ से जूझते रहने के कारण पृथ्वी ग्रह का स्वर्गिक रूप विकृत हुआ और यह लोक स्वर्ग से नर्क बन गया।

मैं की नकारात्मक शाक्ति के परिणाम किसी से छिपे नहीं है। तरह-तरह के युद्ध इन्ही नकारात्मक शक्तियों के कारण हुए, विश्व युद्ध के खतरे बने हुए है, बिगड़ते प्रर्यावरण के कारण प्रकृति के असन्तुलन का भयंकर खतरा मानव जाति के लिए विकट समस्या है। इस मैं की नकारात्मक शक्ति से छोटे स्तर से लेकर बड़े स्तर तक हर कोई प्रभावित है। चाहे परिवार जैसी छोटी ईकाई हो, संस्था अथवा संगठन जैसा समूह हो अथवा राष्ट्र हो, सभी इसी मैं की चपेट में है। ग्रामीण कहावत है लोहे को लोहा काटता है। इस मैं का समाधान मैं मे ही समाया हुआ है।

मैं जब सकारात्मकता से लवालव होता है तो यह स्वमान के रूप में उभरता है। यह स्वमान व्यक्ति को स्वयं के यर्थात स्वरूप, यर्थात कर्म, यर्थात जीवन एवं यर्थात पार्ट से परिचित कराता है। राजयोग स्वमान को विकसित करने का सही मार्ग दिखाता है। स्वमान व्यक्ति को उसकी स्वयं की अथार्टी से परिचित कराता है। उसे अपनी अथार्टीज का बोध कराता है। राजयोग की विद्या में ईश्वर स्वयं जीव आत्मा को स्वमान देते है। परमात्मा द्वारा दिये गये स्वमान मनुष्य आत्मा के लिए वरदान बन जाते है। जब मनुष्य आत्मा स्वमान की स्मृति के अनुरूप जीवन जीता है तो उस स्वमान के अनुरूप उसकी स्थिति बन जाती है। श्रेष्ठ स्थिति के परिणाम स्वरूप उस आत्मा के व्यवहार मे श्रेष्ठता झलकती है इसके कर्म श्रेष्ठता लिये हुए होते है। हमारा परस्पर श्रेष्ठ व्यवहार हमें एक दो के समीप लाता है यह श्रेष्ठता इस सिद्धांत को बल देती है कि "हम साथ-साथ जियेंगे" ।

उदाहरण के लिए हम इस बात पर दृष्टि डालते है कि स्वमान हमें कैसे साथ-साथ जीने की शक्ति देता है। राजयोग के अभ्यासी आत्माओ को ईश्वर ने स्वमान दिया-आप विश्व कल्याण कारी आत्मा हो। जब आत्मा ईश्वर द्वारा प्राप्त इस स्वमान मे स्थित हो जीवन जीता है कि मैं विश्व कल्याण कारी आत्मा हूँ। तो निश्चित ही उस आत्मा का चिन्तन, कर्म, व्यवहार विश्व कल्याण के लिए उसे स्वयं को प्रेरित करेगा। इस प्रकार कल्याण का भाव रखने वाला जीव करूणा, रहम, सहयोग, स्नेह एवं कर्तव्य बोध जैसे द्विय गुणों का स्वयं के जीवन में उपयोग करेगा। परिणाम स्वरूप जैसे वह स्वयं को स्वमान में स्थित होने के कारण मान देना। ऐसा ही वह सर्व का मान रखेगा। इस दिशा में ब्रह्माकुमार व ब्रह्माकुमारीयो का जीवन प्रत्यक्ष उदाहरण है।

ये एक सिद्धांत है जिसमें देने की भावना विकसित हो जाती है उसमें लेने का भाव समाप्त हो जाता है। स्वमान में जीने का अभ्यास मनुष्य के मैं में सकारात्मक शक्तियों का संचय करता है। स्वमान से सम्पन्न व्यक्ति जितना स्वयं को महत्तवपूर्ण समझता है कहीं उससे भी अधिक महत्तव वह इस जगत में रहने वाले जीवों व प्रकृति को देता है। उसकी यह देने की भावना उसे अहंकार शून्य बनाती है। अहंकारी व्यक्ति आशा करता है कि लोग उसका सम्मान करें और उसकी यही तृष्णा उसे लोगों से दूर करती जाती है। जबकि अहंकार विहिन व्यक्ति निरंहकारी कहलाता है। ऐसा व्यक्ति सर्व को सम्मान की दृष्टि से देखता है। उसका यह सम्मान पूर्ण व्यवहार उसे सर्व के सम्मान का पात्र बनाता है। इस प्रकार के व्यक्ति के साथ हर कोई जुड़ना चाहता है।

धरती माँ की पुकार ''मेक मी हेविन'' को कोई एक व्यक्ति पूरा नहीं कर सकता। यह धरती हम सबके लिए है। इसका स्वर्गिक स्वरूप भी हम सबके लिए है अतः प्रयास भी हम सब को मिल जुल कर ही करने है। ''हम साथ-साथ जियेंगे'' यह सिद्धांत हमें एक दो के समीप लाता है। इस सिद्धांत के तरह हम एक दो का सम्मान रखना सीखते हैं। इस घरा पर जो भी पार्टधारी है हरेक का अपना महत्तव है। इस दृष्टि से हर व्यक्ति सम्मान का अधिकारी है। हर आत्मा में कोई न कोई कला है, विशेषता है, गुण है जिसे वह कार्य में लगाकर धरती माँ के रूप को स्वर्गिक बनाने में मददगार हो सकता है। यदि हम विखरेगें तो एक दो की विशेषताओं से कैसे लाभ ले सकेगें। शास्त्रो में गायन भी है भगवान समर्थ थे तो भी श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत का उठाने में सभी के सहयोग की अंगुली ली। सर्व के सहयोग से ही सुखमय संसार की स्थापना सम्भव है। इसलिए भी हम सब को साथ-साथ जीना आवश्यक है।

धरती माँ को स्वर्ग बनाने के लिए ''हम साथ-साथ जियेंगे'' इस सिद्धांत की पालना के लिए हम प्रतिबद्ध हो सकते है, इस सिद्धांत की पालना सहज सम्भव तब होती है जब हम सम्मान के महत्तव को समझते हो, एक दो के प्रति सम्मान का नजरिया हमें बांधता है। हमारी सम्मानपूर्ण दृष्टि अन्य की दृष्टि मे हमें महत्तवपूर्ण बनाती है। ऐसे मे वे हमसे मिलना पसन्द करते है। जिस प्रकार हम अपने स्वमान मे जीते हैं वैसी ही स्वमान भरी दृष्टि से हम अन्य को देखे। हम सब आत्माये ईश्वर की सन्तान है। प्रकृति ईश्वर की अदभुत रचना है। जिस प्रकार हम ईश्वरीय सन्तान है ठीक ऐसे ही हर कोई ईश्वरीय सन्तान है। वह भी उतने ही उँचे स्वमान वाला है जितना हम है। अतः जीवन के इस सामान्य सिद्धांत ''हम साथ-साथ जियेंगे'' की सहज पालना के लिए हमें स्वमान पूर्ण जीवन व सम्मान पूर्ण व्यवहार करने की बहुत जरूरत है। इस सिद्धांत की पालना से हमारे संयुक्त प्रयास धरती मां की आवाज ''मेक मी हेवीन'' को पूरा अवश्य करेंगे।

संघे शक्ति कलियुगे

हम साथ-साथ जियेगे तभी हम संगठित रह पायेंगे। संगठन की शक्ति के बिना कलियुग पर जीत पाना सम्भव नहीं है। वर्तमान समय धरा पर मायावी प्रवृत्तियो का बोलबाला है। इन मायावी प्रवृत्तियो के कारण धरती माँ की स्थिति बेहाल है। इसी बेहाल स्थिति से उपर उठने के लिए माँ को पुकार लगानी पड़ी मेक मी हेवीन। धरती माँ को अपना वह स्वरुप याद है जब यहाँ व्यक्ति निमित्त भाव से अपने उत्तरदायित्वो का निर्वाह करता था। हर कार्य करने से पूर्व उसकी दृष्टि बेहद में रहती थी। वह हर कार्य को मानसिक संकीर्णताओं से उपर उठ कर करता था। उसके कार्यो मे निस्वार्थ सेवा भाव स्पष्ट झलकता था।

ये मानव के जीवन के वे उत्कृष्ण गुण थे जिनसे उसका व्यक्तित्व विराट बनता था। अपने इन गुणो के कारण व्यक्ति स्वयं मे तो महान होने का परिचय देता ही था साथ ही साथ वह धरती के संरक्षक का भी कार्य करता था। आज जबकि धरती माँ अपने खोये हुए स्वर्गिक स्वरुप को पुनः पाने के लिए पुकार कर रही है तो हम सभी पृथ्वी वासियों का दायित्व हो जाता है कि हम स्वयं के इन महान गुणों का पुनः वरण कर धरती को उसका सवर्गिक स्वरुप प्रदान करे।

निमित्त भाव का गुण व्यकित को संसार से, संसार के जीवो से और यहाँ तक की संसार से परे रहने वाले ईश्वर से भी जोड़ता है। ये जुड़ाव ही मानव जीवो को साथ-साथ जीने का सहज माहौल प्रदान करता है। ये सहजता का माहौल व्यक्ति को भी सहज बनाता है। जब व्यक्ति अपने मानसिक स्तर पर इस बात को स्वीकारता है कि मै निमित्त हूँ तो तुरंत ही एक भाव और उत्तपन्न होता है कि करन करावन हार परमात्मा है। परमात्मा ने ही मुझे निमित्त बनाया है ये भाव व्यक्ति की चेतना को जागृत करते है उसके विवेक को जागृत कर उसे यह अहसास कराते है कि ईश्वर सत्य है अतः वे अच्छे के लिए ही निमित्त बनता है। अगर कोई व्यक्ति समाज मे प्रदुषण पैदा करता है अव्यवस्था उत्तपन्न करता है, मायावी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देता है तो निश्चित है कि उसे इन सबके लिए परमात्मा ने निमित्त नहीं बनाया बल्कि ये उसकी विकृत सोच का परिणाम है जिसके लिए वह स्वयं उत्तर दायी है। अतः व्यक्ति को चाहिये वह ईश्वर द्वारा बताये गये सद मार्ग की वृद्धि के लिए स्वयं को निमित्त बनायें। वह निमित्त बनकर संसार के जीवो का प्यार परमात्मा के साथ बढ़ाये। वह विश्व कल्याण के कार्यो के निमित्त बनकर संसार के लोगो को कल्याण का मार्ग दिखाये। वह अपने को निमित्त बनाये संसार में आदर्शो कि स्थापना के लिए। वह अपने को निमित्त बनाये जीवन के सामान्य सिद्धांतो के पालना के लिए। उसकी चेतना इस बात के लिए सदा जागृत रहे जैसा कर्म मैं करुँगा मुझे देख और करेंगे। जब वह इन सब बातो के लिए स्वयं को निमित्त समझ कर अपने मन बचन कर्म पर ध्यान देता है। तथा मन वचन-कर्म से श्रेष्ठ समाज की स्थापना में योगदान देता है तब ही वह धरती मां को स्वर्ग बनाने की दिशा में कुछ कर रहा होता है।

जब व्यक्ति निमित्त भाव से अपना कार्य व्यवहार करता है तो उसकी बुद्धि संकुचित नही होती। उसकी बुद्धि बेहद मे रहती है। हदे व्यक्ति को अहंकारी बनाती है। हदे व्यक्ति को सिमित दायरो में बाँधती है। सिमित दायरो का आभास व्यक्ति को सीमाओ की अनुभूति कराता है जिससे उसे अपने होने का अहसास होता है और उसमे विकृत मैं उत्तपन्न होता है। यही विकृत मैं अहंकार कहलाता हो जो उसे सीमाओ में बांधता है तथा उसकी मनोवृत्तियो मे प्रदुषण पैदा करता है। बेहद की दृष्टि बेहद की वृत्ति मनुष्य के लिए अति सुखकारी है। यह बेहद की जीवन संसार के लिए कल्याणकारी है। बेहद अर्थात मैं सबका अर्थात सब के लिए तथा सभी मेरे। यह भाव व्यक्ति को सीमाओ से ऊपर उठाता है। इस भाव से उसमे अनन्त ऊर्जा का विकास होता है। जैसा कि भाव व भावना मनुष्य आत्मा के मूल केन्द्र मे समाई है। तथा यही मूल केन्द्र ऊर्जा का भण्डार है। बेहद की स्थिति ऐसी स्थिति है जो व्यक्ति मे अथाह प्यार पैदा करती है।

प्यार एक ऐसी अदभुत शाक्ति है जिससे विरोधी भी अपने हो जाते है। समस्याओ का हल मिल जाता है। जब व्यक्ति की भावना व भाव बेहद मे होता है तो उसके द्वारा हुए कार्यो से अनेको को लाभ मिलता है। उसकी योजनाए व कर्म कल्याणकारी साबित होते है बेहद व्यक्ति को दूरगामी बनाता है, बेहद मे जीने वाले व्यक्ति की दृष्टि में आने वाले विजन सहज ही पूर्णता को प्राप्त करते है। उसके विजन समाज मे साकार रुप धारण कर धरती माँ को उसका मूल रुप स्वर्गिक रुप प्राप्त कराने में मददगार साबित होते है।

बेहद की दृष्टि व्यक्ति को निस्वार्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। जब व्यक्ति अपने कर्तव्यो को निस्वार्थ भाव से करता है तब वे कर्म इकानामी से पूर्ण हो जाते है। निस्वार्थ भाव से कर्म करने वाला ही सच्चे अर्थो में सेवाभावी है। ऐसा सेवा भावी सर्व का सहज ही प्रिय बन जाता है। निस्वार्थ भाव से कर्म करने वाले व्यक्ति को सेवा की सहज ऑफर मिलती है। ऐसा व्यक्ति संसार मे बड़े-बड़े कार्यो को पूर्ण करने के निमित्त बन जाता है। निस्वार्थ भाव से सेवा करने से जो सन्तोष का परम सुख मिलता है वह संसार के वैभवो को प्राप्त करने से भी प्राप्त नही हो पाता है। निस्वार्थ जीवन ही निष्काम कर्म करने की शक्ति प्रदान करता है। यू तो परमात्मा को ही पूर्णता निष्काम कर्म करने वाला कहा जाता है क्योंकि परमात्मा किसी भी प्रकार के कर्म के फल से परे है। इसी भांति जो व्यक्ति इस धरा को पावन बनाने के लिए इसे इसका खोया हुआ स्वार्गिक रुप प्रदान करने के लिए तन, मन, धन, मन वचन कर्म से निस्वार्थ हो सेवा करता है। वह निश्चित ही फल के रुप मे वर्तमान समय ईश्वर के गुणों को प्राप्त करता है तथा भविष्य में भी ईश्वर के वरदान स्वरुप, ईश्वर पिता से वर्से के रुप में इस धरती पर वैकुण्ठ का राज्य भाग्य प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति सच्चे अर्थो में अपनी निस्वार्थ जीवन के कारण समाज में मैत्री भाव से जीता है तथा जीवन के इस सामान्य से सिद्धांत ''हम साथ -साथ जियेंगे'' की पालना के लिए समाज में वातावरण तैयार करता है।

निर्मलता से निखरेगा विश्व का रुप

साथ-साथ जीना हम सबकी नियति है। अखिल ब्रह्माण्ड में कोई ऐसा ग्रह अथवा उपग्रह नही है जहाँ केवल कोई एक व्यक्ति वास करता हो। बल्कि प्रथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहाँ मनुष्य जीव निवास करता है। प्रकृति ने उसे वह सब सहज उपलब्ध कराया है जिसकी उसे जीवन के सरक्षंण एवं सवंर्धन के लिए जरुरत है। समाज में उसे वह सब प्राप्त करने के अवसर सुलभ है जिनसे वह स्वयं के जीवन व विश्व के लिए और भी कुछ अधिक बेहतर कर सकता है। इस बेहतर बनने व करने की प्रक्रिया में यदि कुछ करने योग्य है तो वह है निर्मलता का विकास।

निर्मलता का विकास अपने आप मे अति व्यापक क्षेत्र है। आज विश्व के लोग विकास के नये सोपान के रुप में आर्थिक स्मृद्धि एंव स्वयं को सुरक्षित बनाये रखने की क्षमता का निरन्तर विकास इन दो पहलूओ पर खास ध्यान लगाये है। इन दोनो के विकास को ही वे शक्ति सवंर्धन अथवा शक्ति सम्पन्न बनने के रूप मे स्वयं को देखते है अथवा जो इस दौड में है वे स्वयं को ऐसा ही शक्ति सम्पन्न देखना चाहते है। इस दौड़ ने विश्व मे असन्तुलन पैदा किया है, पर्यावरण को भारी नुकसान पहुँचाया है। पृथ्वी ग्रह तो क्या ब्रह्माण्ड में अप्राकृतिक परिवर्तनो को घटित कर मानव जाति एवं समस्त प्राणी जगत के लिए खतरा पैदा किया है। यहाँ तक कि विश्व में विनाशलीला करने की क्षमता को लेकर अनेक राष्ट्र अपने आप पर गर्वित है। इस गर्व में असुरक्षा है, असन्तुलन है, अमानवीयता है, अभद्रता है, अज्ञानता है। हम ज्ञान दृष्टि को

विकसित करे और विनाश से बचने के लिए ''निर्मलता का विकास'' इसे विकसित राष्ट्र बनने के नये सोपान के रूप में ले। हर मानव विकास के सोपान के रूप में ''निर्मलता का विकास'' इसे चुनें।

निर्मलता वह स्वरूप है जिसका गायन है। इस गायन को जरा हम झांकि के रूप में देखे। निर्मलता के रूप को झांकी के रूप में देखना हम सब के लिए कितना आनन्दकारी होगा स्वयं ही अनुभव करें- निर्मल जल, निर्मल वाणी, निर्मल व्यवहार, जीवन में निर्मलता, स्थान की निर्मलता, निर्मल दृष्य, व्यक्तित्व में निर्मलता, भाव में निर्मलता व भावना में निर्मलता, निर्मल हृदय। ये निर्मलता का स्वरूप हमारे सामने कितना विराट आईना है। इस आइने में हम निर्मल भविष्य व निर्मल विश्व को देखें। ऐसा भविष्य जो अपनी निर्मलता के कारण अदभुत आकर्षण शक्ति से हमें अपनी ओर खींच रहा है। ऐसा निर्मल विश्व जो अपने आनन्दमयी, सुखमयी स्वरूप से ऐसा विश्व पाने के लिए हमें लालायित कर रहा है।

मल गन्दगी को कहा जाता है। संसार में ऐसा कोई नहीं है जो मल को पसन्द करे। यदि कहीं इसे लेकर पसन्दगी है तो इसे उसका दुर्भाग्य अथवा अज्ञान ही कहेगें। हर कोई स्वच्छ स्थान पर उठना बैठना पसन्द करता है। निर्मल जल पाने के लिए लोग विज्ञान के साधनो का प्रयोग करते है। हवा को प्रदुषित होने से, अथवा आवाज से होने वाले प्रदुषण से बचने के लिए सरकार ने अनेक नियम बनाये हुए है। आहार सम्बन्धी पदार्थो में मिलावट न हो उसके लिए कई कदम उठाये जाते है। व्यक्ति के व्यवहार में, कर्म के सम्बन्ध में धोखा धड़ी अथवा रिश्वत खोरी न हो उसके लिए एन्टी करप्सन डिपार्टमेंट बनाये गये है। कोई नहीं चाहता बुराई मे, गन्दगी में हम जियें। इतने सब कदम उठाते भी ये विश्व अनेको दृष्टि से गन्दगी से भरता जा रहा है। ये गन्दगी से भरा विश्व और इसमे ये अहसास हमने बहुत कुछ पाया है अथवा हम विकसित राष्ट्र के निवासी है। यह अज्ञान ही है। अन्धकार में होते हुए प्रकाश में होने का भ्रम है।

बहार आयें, इस अज्ञान के परदे से यदि हम विश्व के रूप को निर्मल स्वरूप में देखना चाहते है। यदि हम निर्मल विश्व चाहते है तो निर्मलता के विकास को हम अपने विकास का सबसे पहला एजेन्डा बनाये। व्यक्तिगत तौर पर व हम जिस भी क्षेत्र में कार्यरत है। निर्मलता को स्वयं में समाकर, निर्मलता से कर्मो का सम्पादन करें। ये निर्मलता हमारे अन्तः करण को शुभ भावना से भरती है। जहाँ शुद्धि है वहां ही शक्ति है। निर्मलता शुद्धि का दृष्टिरूप है। ये शुद्धता वयक्ति में शक्ति भरती है जिससे उसमें अथकपन पैदा होता है। ये निर्मलता की शक्ति मिशाईल की शक्ति को भी नियन्त्रित करती है। दीपावली के अवसर पर अथवा अच्छे कार्यो के शुभ मुहूर्त पर शुभ लाभ लिखते है। इस शुद्धि मे ही शुभ है व इस शुद्धि में ही लाभ है। शुभ और लाभ चाहने वाले मेरे मित्रो, बन्घुओं निर्मलता को अपनाओ और ईश्वर का वर्सा पाओ।

यदि व्यक्ति निर्मलता को छोड़कर जीवन यापन करता है तो जरा सोचें वह क्या पाना चाहता है - धन, वैभव, शान, शौकत, अधिकार, वर्चस्व, भोग, ईश्वर प्राप्ति, मुक्ति, जीवन मुक्ति एकाधिकार, मान-

सम्मान, एकान्त? ये सब जिसे भी मनुष्य पाने योग्य समझता है अथवा पाने के लिए लालायित है अथवा संकल्पित है अथवा उत्साहित है अथवा प्रयत्न शील है अथवा पाने के अति करीब है। से सब ऐसी स्थितियां है जो उसे संसार के साथ जोड़े हुए है। अतः स्पष्ट होता है उसे हर लक्ष्य के साथ संसार में संसार के लोगो के ही साथ- साथ जीना है। अतः साथ -साथ जीना उसकी नियति है जब साथ-साथ जीना नियति है तो क्यों न हम साथ-साथ जीकर इस धरा को स्वर्ग बनाये। क्यों न हम इस विश्व को बेहतर बनाये क्यों न हम अपने प्यारे पृथ्वी ग्रह को सुरक्षित बनाये। आओ हम सब मिलकर अपने को सभ्य बनाये। सभ्य व्यक्ति गन्दगी से दूर रहता है अथवा स्वयं को गन्दगी से दूर करता है। यहां ऐसी स्थिति है हम स्वयं को इस विश्व से जो अब गन्दा हो गया है भी दूर नहीं कर सकते। अतः हम स्वयं में निर्मलता को बढ़ाये स्वयं में निर्मलता के विकास से विश्व को बेहतर बनाये। निर्मलता का विकास कर विश्व में विकास की धारा बहाये। इस प्यारे पृथ्वी ग्रह पर साथ- साथ जीने के लिए हम अपने बोल में, सोच में, कर्म में निर्मलता को बढ़ाये। हम आत्माये ईश्वरीय सन्तान है, जो ईश्वर को नापसन्द है वह न अपनाये जो ईश्वर को पसन्द है वह अपनाऐ। ईश्वर की शिक्षाओ के अनुशरण से निर्मलता बढ़ेगी। ये विश्व अपने निर्मल स्वरूप को प्राप्त कर वैकुण्ठ कहलायेगा। हम विश्व के लोग दैवी सभ्यता वाले देवी देवता कहलायेगें और ये सारा विश्व भारत देवलोक कहलायेगा। ये सब निर्मलता के फलस्वरूप ही आयेगा।

निर्माणता से बदलेगी तस्वीर

ये तस्वीर हमारी हो सकती है हम जिनके बीच में है उनकी हो सकती है। जिनके साथ हम जुडे है उनकी हो सकती है। ये बीते कल, आज अथवा आने वाले कल की हो सकती है। कहाँ तक बढ़ायें - ये तस्वीर किसी की भी हो सकती है। अच्छी तस्वीरे पसन्द करना मानव के स्वभाव में है। ये तस्वीरे सदा अच्छी रहें अच्छी बने बस इसके लिए जरूरत है मानव अपने जीवन में निर्माणता को अपनाए। निर्माणता का अभाव जब इन्सान में आता है तो बनती है हिरोशिमा, नागासाकी जैसी परमाणविक त्रासदी से उत्तपन्न तस्वीरे, युवा क्रान्ति को कुचलने वाली तस्वीरे, बाल अथवा महिलाओ के शोषण की तस्वीरे, साम्प्रदायिक झगड़े अथवा आतंकी हमलो की तस्वीरे। चरित्र हीनता अथवा पारस्परिक वैमन्सय की तस्वीरे। कुछ तस्वीरे ऐसी भी बनती है जिनके लिए हम जिम्मेदार प्राकृतिक आपदाओ को मानते है चाहे वे भूकम्प की हो, सूनामी की हो, बाढ की हो, अथवा सूखे की स्थिति की हो। क्या ये तस्वीरे हमें पसन्द है जबकि हमें ये पसन्द नहीं है फिर क्यों हो रहा है ऐसी तस्वीरो का निर्माण। इनके निर्माण के लिए भी हम मानव ही जिम्मेवार है। आओ हम अपनी नई जिम्मेवारियों को समझे। ऐसी तस्वीरो का निर्माण न हो उसके लिए हम निर्माणता को अपनाएं। निर्माणता के द्विय गुण को आत्म-सात कर कार्यो का संचालन करे। निर्माणता की सबसे पहले जरूरत होती है कि हम अपनी चेतना में इसे स्थान दे। हम महसूस करे इस बात को कि किसी भी बात को बिगाड़ना आसान है लेकिन बनाने में बहुत मेहनत है। और बनाने के लिए चाहिये निर्माणता। अतः इस बात के लिए खुद को सतर्क रखे कि हमें निर्माणता को अपनाकर आगे बढ़ना है। सम्बन्धों को ही ले, इनका टूटना इनमें मनमुटाव उत्तपन्न होना सहज है लेकिन सम्बंधो को सजोकर रखना, इनमें मधुरता कायम रखना यह निर्माणता के गुण से ही सम्भव है। व्यवहार में हम निर्माणता बनाये रखे इसके लिए दृष्टिकोण पर भी बहुत ध्यान देने की जरूरत है। जब हमारा दृष्टिकोण निर्माणता का होता है तो हम ध्यान देते है इस बात पर कि हमसे आपसी व्यवहार में कहीं कुछ ऐसा घटित न हो जो निर्माण में बाधक बने। निर्माणता हमें सिखाती है कि हम निर्माण के निमित्त है। अतः कुछ भी ऐसा घटित होने से हम टाले जो व्यवधान बने । निर्माणता विराट व्यक्तित्व की पहचान है। आज जब हम अच्छी तस्वीरो के निर्माण की बात कर रहे है तो इससे अच्छी तस्वीर और क्या हो सकती है कि ये विश्व बेहतर रूप लिए हुए हो। एक ऐसा विश्व जहाँ प्राकृतिक समृद्धि एवं

प्राकृतिक सौन्दर्य हो। विज्ञान कल्याण मयी हो, मानव का जीवन आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यो से सम्पन्न हो। समाज सुखमयी, व्यवस्थाए जन उपयोगी हो। मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन एवं राज़कारोबारी व्यवस्था परोपकारी, न्याय कारी एवं सर्व हितकारी हो।

विश्व की ऐसी तस्वीर जो कभी पहले थी आज धूमिल हुई है। हमें मिलकर फिर से अच्छा रूप देना है। इसके लिए हर व्यक्ति को अपने आचरण में निर्माणता की आवश्यकता है। यदि हमारे व्यवहार में निर्माणता है तो हम विखरने से बचेगें। निर्माणता के दृष्टिकोण के साथ जीकर ही हम साथ- साथ जी सकेगें। साथ- साथ जीकर ही हम अपने संगठित प्रयासो से इस धरती मां की पुकार को पूरा कर सकेंगे। धरती मां की ये पुकार ''मेक मी हेविन'' को पूरा करने के लिए हम आगे आये।

जब व्यक्ति निर्माण के लिए कमर कस लेता है तो उसका निर्माणता का गुण इमर्ज हो जाता है उसकी प्राथमिकता होती है निर्माण। अक्सर देखने में आता है जब व्यक्ति निर्माण को महत्तव न देकर स्वयं को अथवा अपनी बात को अधिक महत्तव देने लगता है तो विघटन पैदा होता है और निर्माण का कार्य या शुरू ही नहीं हो पाता अथवा अधूरे में छूट जाता है। निर्माणता वह गुण है जिसमें व्यक्ति स्वयं को भी पीछे कर निर्माण को महत्तव देता है क्योंकि वह समझता है निर्माण को साधने मे ही सर्व का हित है। सर्व के हितो के लिए निर्माणता के गुण वाला व्यक्ति स्वयं के स्वार्थो को तिलान्जली दे देता है। वह सहन करके भी सुनकर- समाकर भी निर्माण के लक्ष्य को महत्तव देता हुआ स्वयं की व संगठन की शक्ति को कल्याणमयी बनाता है सुलभ साधनों का प्रयोग करते हुए वह पृथ्वी लोक पर स्वच्छ, सुन्दर, समर्थ, सहयोग का वातावरण बनाता है। ऐसे निर्माणता के गुणधारी व्यक्ति ही धरती माँ की पुकार ''मेक मी हेविन'' को साथ-साथ रह संगठित प्रयासो से पूर्ण कर जग में अपनी सार्थकता को पूर्णकरता है।